

ॐ गुं गुरुवे नमः
श्री राम मंत्रार्थि मण्डपम् निर्माण का इतिहास

ॐ गुं गुरवे नमः

श्रीसीतारामाभ्यां नमः श्रीमतेरामानन्दाचार्याय नमः

श्री राम मन्त्र सात करोड मन्त्रो मे सर्वोपरि है।

“रामनाम जपादेव मुक्तिर्भवति” (यजुर्वेद) परात्पर

भगवान श्री राम जी के गुरुदेव ब्रह्मपुत्र

श्री वशिष्ठ जी की घोषणा है -

नाना तर्क विवाद गर्त कुहरै पाता शय ये जन्तवः ।

तेषामेकम् संशयं सुशरणं श्री राम नामात्मकम् ॥

मन्त्रं नास्ति यतः परं सुललितं प्रेमरूपदं पावनम् ।

स्वल्पायास फल प्रदान परमं प्रोत्कर्ष सौख्यप्रदम् ।

(वशिष्ठ रामायण)

जगज्जननी श्रीजानकीजी से लेकर भगवान
श्रीरामजी के अवतार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य
जी तथा उनके शिष्य प्रशिष्य अद्यावधि
श्रीराममन्त्रराजकादान भवग्रस्त जीवों के
कल्याणार्थ करते आ रहे हैं। भगवान
कपिलावतार द्वारा चार्य श्रीयोगानन्दाचार्यजी
के द्वारा प्रशस्त इसी राममन्त्र की परमपावनी
आचार्य परम्परा में सीताग्रज श्रीलक्ष्मीनिधि
के अवतार पंचरसाचार्य अनन्त श्रीसम्पन्न
स्वामी श्रीरामहर्षणदासजी का प्रादुर्भाव

कलिग्रस्त जीवों के उद्धारार्थ हुआ है। जिनकी
महान कीर्ति वसुन्धरा में परि-व्याप्त है।

प्रेमावतार श्री स्वामी जी ने अपने प्रेमाश्रुओं से
भूमि का सिंचन करते हुये तेरह करोड़ सविधि
पूर्वक जप अनुष्ठान के साथ अपने समग्र जीवन
पर्यन्त श्री राम मन्त्र की उपासना की है।

जिसके परिणाम स्वरूप उनके सर्वांग में
श्री राम मन्त्र का दर्शन
प्रत्यक्ष रूप से भक्तों ने किया है।

श्री स्वामी जी ने एक बार श्री राम मन्त्र का जप

करते समय एक परम दिव्य मन्दिर में
स्थिति दिव्य भव्य परम प्रकाश मय
श्री राम मन्त्र का दर्शन किया और प्रभु प्रेरणा
से ही अपने अन्तरंग शिष्यों को तदनुरूप
भवन निर्माण कर श्री राम मन्त्र को साकार
स्वरूप देने का निर्देश किया। श्री स्वामी जी
के प्रधान शिष्य महान्त श्री हरिदास जी
ने पूर्ण मनोयोग से श्री राम मन्त्र की
रचना, मन्दिर निर्माण तथा प्रतिष्ठा
का कार्य सम्पन्न करवाया।

श्री म. हरिदास जी ने अपने जीवन प्रर्यन्त
अत्यन्त लगन से श्री स्वामी जी की जैसी
सेवा की उसकी तुलना और उसका वर्णन
शब्दों के माध्यम से करना सम्भव नहीं है।
जिसके परिणाम स्वरूप श्री स्वामी जी
ने भी श्री अवध धाम के दो स्थान तथा
भारत वर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में लगभग
दस स्थानों की महान्ती और उनके संचालन
की सेवा श्री हरिदास जी को सौंप दी थी
जिसका कि श्री हरिदास जी ने आजीवन

सुन्दर सुचारु रूप से निर्वाह किया
श्री स्वामी जी के प्रति
अगाध निष्ठा सम्पन्न
सभी शिष्यों ने भी
तन मन धन से
श्री राम मन्त्र मन्दिर के निर्माण में
सहयोग किया।
जिसके परिणाम स्वरूप
दिनांक-२१-४-२००८ में
श्री राम मन्त्रार्थ मण्डपम् में श्री राम मन्त्र

भगवान की प्रतिष्ठा हुई। यह मन्दिर मात्र
ईंट पत्थर से बना हुआ भवन नहीं है
अपितु आचार्य महाप्रभु का हृदय है
जिसमें श्री राम मन्त्र भगवान अष्टयाम
बिहार करते हैं।
मन्त्र गोपनीय होता है। सर्वसामान्य के बीच
इसके प्रकाशन का निषेध है।
परन्तु हमारे पूर्वचार्यों ने
कृपा-करुणा वस जीवों के कल्याणार्थ
मन्त्र का प्रकाशन भी किया है

शेषावतार भगवान श्री रामानुजाचार्यजी
ने अर्धरात्रि के समय गोपुर पर
आरुढ़ हो उच्च स्वर से परम
गुह्य अष्टाक्षर श्री नारायण मन्त्र का
उद्घोष किया था। इसी तरह परम
करुणामई जगज्जननी श्री जानकीजी
ने माया में आकण्ठ डूबे हुये
जीवों के उद्धारार्थ श्री स्वामीजी
के हृदय में बैठ कर लोक वेद
की मर्यादा की अपेक्षा न करते हुये

परम दुर्लभ श्री राम मन्त्र का
प्रकाशन करवाया है।
प्रश्न उठता है कि मन्त्र को
प्रकाशित करने के बाद भी
र के ऊपर बिन्दी न रख कर
उसे म के रूप में क्यों रखा गया है
इसका समाधान है एक तो मन्त्र के
वास्तविक स्वरूप पर
हल्का सा परदा रख कर
गोपनीयता को सुरक्षित रखा गया है

दूसरे मन्त्र के उच्चारण के सम्बन्ध में
भी स्पष्टीकरण है
कि मन्त्र को राम
उच्चारण करें अन्यथा नहीं।
जो भी जन स्वामी जी के हृदय धन
श्री राम मन्त्रार्थ मण्डपम् बिहारी
भगवान का दर्शन करेंगे
उन्हें परम दुर्लभ श्री राम धाम की
प्राप्ति का मार्ग अनायास ही
प्राप्त हो जायेगा। जय सियाराम।

